उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन

विनीता केसरी[1] डॉ सुमन शर्मा [2]
शोधार्थी [1] शोध पर्यवेक्षक[2]
ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय,
ईमेल - vinita.obr@gmail.com
विभाग- शिक्षा

सारांश
जीवन कौशल का विचार जीवन के दर्शन से जुड़ा है जो सीखने में सूचना, दृष्टिकोण और सामाजिक कौशल को साझा करने पर जोर देता है। इसका लक्ष्य विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की क्षमताओं को प्राप्त करने में मदद करना और उन्हें जीवन की समस्याओं का सामना करने की इच्छा शक्ति से लैस करना है।

इस तरह किया गया। "जीवन कौशल एक व्यक्ति की दैनिक जीवन में अनुकूलता और अच्छे आचरण हैं। जीवन कौशल अनुकूली और रचनात्मक व्यवहार हैं जो एक व्यक्ति को रोजमर्रा की जिंदगी की कठिनाइयों और बाधाओं को सफलतापूर्वक नेविगेट करने में मदद करते हैं। एक विशेष उपहार जीवन है। इसलिए, फ्यूजिंग द्वारा जीवन में विविध प्रकार की योग्यताओं से युक्त जीवन सुख, शांति और धन का निर्माण होता है। शोधार्थी के शोध लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए इस अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के जीवन कौशल की विश्लेषणात्मक परीक्षा आयोजित की गई है। अधिवास, लिंग, और छात्रों के जीवन कौशल के साथ-साथ शोध परिणामों पर पाठ्यक्रम इस अध्ययन में शामिल हैं। इसका उपयोग भविष्य में शोधकर्ताओं द्वारा किया जा सकता है, और अन्य तत्वों का अध्ययन करना भी संभव है जो अनुसंधान को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रस्तावना
मानव मन गतिशील और जिज्ञासु है, और प्रयोग ही उन्नति का मूल है। आज हर जगह प्रगति देखी जा सकती है। चल रहे अध्ययन का परिणाम यह है कि। इसी प्रकार शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है जिसका लक्ष्य सीखी गई सूचनाओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना है। शब्द की अर्थ संबंधी जटिलताओं में शामिल हुए बिना, यह व्यापक रूप से एक प्रतिभा को संदर्भित करने के लिए समझा जाता है जिसका उपयोग शिक्षा और रोजमर्रा की जिंदगी दोनों में किया जाता है। एक बुनियादी प्रतिभा कलम पकड़े हुए है; क्रिकेट खेलना एक कठिन कौशल है। चलने की क्षमता स्वाभाविक रूप से अपने आप विकसित हो जाती है, लेकिन बात करने की क्षमता परिवेश से प्रभावित होती है। जबकि कुछ क्षमताएं, जैसे फुटबॉल रोल करने या बस चलाने की क्षमता, अभ्यास के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं, अन्य, जैसे तार्किक रूप से सोचने और खुद को रचनात्मक रूप से व्यक्त करने की क्षमता, जागरूकता और प्रतिबिंब द्वारा बनाई जाती हैं।
जीवन कौशल अनुकूली और रचनात्मक व्यवहार हैं जो किसी व्यक्ति को रोजमर्रा की जिंदगी की कठिनाइयों और बाधाओं को सफलतापूर्वक नेविगेट करने में मदद करते हैं। एक विशेष उपहार जीवन है। इसलिए जीवन को विविध प्रकार की क्षमताओं से जोड़कर जीवन में सुख, शांति और धन का निर्माण होता है। जीवन कौशल सिखाना शैक्षिक प्रणाली की जिम्मेदारी है। शिक्षा के क्षेत्र में जीवन कौशल की धारणा अद्वितीय है। वही शिक्षा जो एक छात्र को समाज, अपने देश और पूरी मानव जाति के लिए सहायक बना सकती है। शिक्षा और स्कूलों का एक उद्देश्य हो सकता है जब किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व पूरी तरह से बनता है। एक व्यक्ति को अपने घर, परिवार, समुदाय, देश और विश्व से संबंधित होने की भावना प्रदान कर सकता है; यह जानकारी दे सकता है कि

उन्होंने एक व्यावहारिक आकार सीखा है; यह उन्हें जीवन की चुनौतियों को समझने और उनका सामना करने की क्षमता दे सकता है। उन्हें कायरों की तरह आतंक में भागने की बजाय विवेक से जीवन की बाधाओं का सामना करने में सक्षम होना चाहिए। वास्तव में, प्राप्त जानकारी, आत्म-प्रतिबिंब, चिंतन और रचनात्मकता के माध्यम से, जीवन कौशल शिक्षा व्यक्तियों को जीवन से जुड़े तनावों, भावनाओं और संवेदनाओं के साथ समन्वय और संतुलन विकसित करने में सक्षम बनाती है। जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से पारस्परिक संपर्क और संचार में सकारात्मक सुधार लाया जाता है। जीवन कौशल शिक्षा के उपहार में समस्या समाधान, विवेकाधीन निर्णय लेना, पहल, दक्षता आदि शामिल हैं। भौतिकवाद की चमक के बजाय, जीवन का अकेलापन रचनात्मक प्रयासों को पूरा करने से भरा है। जीवन कौशल में शिक्षा स्वयं के बारे में, अपने परिवार और समाज के बारे में सोचने के साथ-साथ सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद बुद्धिमान निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा देती है।

शोध की आवश्यकता व महत्व

यह तथ्य कि हम इंसान हैं, जीवन कौशल शिक्षा की मांग पैदा करता है। भाषा, तर्क और प्रकृति का उपयोग करने की क्षमता, अन्य बातों के अलावा, मानव होने का मतलब है, जबकि अन्य प्रजातियां स्वाभाविक रूप से इन लक्षणों को प्राप्त करती हैं। यह गारंटी नहीं देता कि सभी लोगों में ये विशेष लक्षण हैं। आदर्श होगा हमें जागरूक होना चाहिए और अपने कौशल का उपयोग करना शुरू करना चाहिए। मानव नवजात वास्तव में इतने अविकसित हैं कि, अगर उन्हें अपने स्वयं के उपकरणों पर छोड़ दिया जाए और दूसरों की दिशा और सहायता के बिना, वे अपने भौतिक अस्तित्व के लिए आवश्यक सबसे मौलिक कौशल भी विकसित नहीं कर पाएंगे। इस प्रकार हमें जीवन कौशल निर्देश की आवश्यकता है। पारंपरिक शैक्षिक मॉडल आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में प्रौद्योगिकी के समावेश के पक्ष में खो गया है। आज छोटे बच्चों के तनाव का अनुभव करने के मामले बढ़ रहे हैं, जब एक और छात्र कहीं अधिक सक्षम और चतुर है।

शोधकर्ता के अनुसार एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो अपने विषय के प्रतिबंधों से विवश होने के बजाय विषय ज्ञान और विषय वस्तु को छात्रों के लिए सुलभ बनाता है। ऐसी खबर की घोषणा की है। तनाव से परेशान एक छात्र ने आत्महत्या कर ली। वह प्रशिक्षक है, साथ में उस संस्कृति के लिए जिसे दोष देना है। जो उस छात्र की नींव को बचपन में बढ़ने में मदद करने में असमर्थ थे। जब मैं "नींव" कहता हूं तो मेरा मतलब अकादमिक सफलता से नहीं है, बल्कि पाठ्येतर गतिविधियों से है। बच्चों को बचपन से ही एक सभ्य जीवन जीने का तरीका सिखाया जाना चाहिए।

छात्र किशोरावस्था के एक आवश्यक युग से गुजरते हैं, जिसके दौरान उनका शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास तेजी से होता है। जीवन कौशल के शिक्षण और सकारात्मक सोच की खेती के माध्यम से वैज्ञानिक परिवर्तन के माध्यम से युवाओं की गुणवत्ता जागरूकता को जागृत किया जा सकता है। जीवन कौशल सिखाने का महत्व भी है

यह युवा लोगों के प्रजनन और यौन स्वास्थ्य के बारे में स्कूलों में दिए गए निर्देश के स्तर का प्रतिनिधित्व करता है। व्यवहार संशोधन या व्यवहार विकास की विधि जीवन कौशल शिक्षा है। वास्तव में, किशोर शिक्षार्थी को जीवन कौशल के विकास के माध्यम से अपनी दैनिक मांगों और मुद्दों को संभालने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार, विद्यार्थियों को जीवन कौशल सिखाने से उनमें आत्मविश्वास आता है। जिस शोध छात्र ने प्रस्तुत किया जा रहा अध्ययन का संचालन किया, उसने इस धारणा को ध्यान में रखते हुए जांच के मुख्य फोकस के रूप में इस मुद्दे को चुना।

समस्या कथन

शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के विषय के रूप में निम्नलिखित विषय को चुना।

"जीवन कौशल शिक्षा के बारे में उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का अध्ययन" शोध अध्ययन के लक्ष्य इस अध्ययन के लिए निम्नलिखित लक्ष्य स्थापित किए गए:

उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों के जीवन कौशल शिक्षा के ज्ञान की जांच करना।
उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के बारे में लिंग जागरूकता पर शोध करना।
उच्च माध्यमिक स्तर के स्कूलों में नामांकित छात्रों की जीवन कौशल शिक्षा की समझ पर शोध करना क्योंकि यह स्थान के अनुसार भिन्न होता है।
उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा उनके आईक्यू स्तर को ध्यान में रखते हुए जीवन कौशल निर्देश को कितना समझा जाता है, इस पर शोध करना।
उच्च माध्यमिक संस्थानों में नामांकित सामान्य, दलित और पिछड़े वर्गों के छात्रों के बीच जीवन कौशल शिक्षा जागरूकता की डिग्री की जांच करना।
छात्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के आईक्यू स्तर और जीवन कौशल शिक्षा की उनकी समझ के बीच संबंधों पर शोध करना

शोध परिकल्पना

इस अध्ययन परियोजना के लिए, निम्नलिखित परिकल्पनाएँ स्थापित की गईं:
उच्च माध्यमिक विद्यालयों में, पुरुष और महिला विद्यार्थियों के बीच जीवन कौशल शिक्षा की समझ में कोई स्पष्ट अंतर नहीं है।
उच्च माध्यमिक स्तर के स्कूलों में, जीवन कौशल शिक्षा के ज्ञान के मामले में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है।
उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बच्चों के आईक्यू स्तर के अनुसार, जीवन कौशल शिक्षा के उनके ज्ञान में कोई स्पष्ट अंतर नहीं है।
उच्च माध्यमिक स्तर के स्कूलों में, दलित वर्ग, सामान्य वर्ग और पिछड़े वर्ग के बच्चों में जीवन कौशल शिक्षा के बारे में जागरूकता का स्तर समान है।
उच्च माध्यमिक विद्यालयों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की बुद्धि की डिग्री और जीवन कौशल निर्देश के उनके ज्ञान में महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। शोध में प्रयुक्त शब्द परिभाषाएँ

1 उच्च माध्यमिक विद्यालय

ऐसे स्कूल जहां कक्षा 11 और 12 के छात्र कक्षाओं में भाग लेते हैं।

2. राजकीय विद्यालय

सरकारी स्कूल वे हैं जो राज्य सरकार द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं।

3. जागरूकता

जागरूक होने का सीधा सा मतलब है कि किसी विशेष विषय के बारे में हमारे पास कितना ज्ञान है और हम अपने दैनिक जीवन में मुद्दों को हल करने के लिए उस ज्ञान को कैसे लागू करते हैं।

4. जीवन कौशल

अनुकूलनीय और रचनात्मक आचरण की क्षमता जिसे "जीवन कौशल" के रूप में जाना जाता है, एक व्यक्ति को रोजमर्रा की जिंदगी की मांगों और मुद्दों को सफलतापूर्वक प्रबंधित करने में सक्षम बनाता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

उपलब्ध कराए गए शोध से जुड़े साहित्य का विकास किया गया है और संबंधित साहित्य के महत्व, उपयोगिता और स्रोतों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा गहन जांच की गई है। समारिया, ममता (2012) के अनुसार, छात्रों की शैक्षणिक सफलता और उनके जीवन कौशल के बीच सीधा और सकारात्मक संबंध है। अलका सक्सेना (2013) ने जांच की कि कैसे छात्रों, प्रशिक्षकों और अभिभावकों ने जीवन कौशल के विषय को देखा जो उच्च माध्यमिक शिक्षा के लिए प्रासंगिक थे। इस वजह से, यह पता चला कि जीवन कौशल शिक्षा के विषय पर

छात्रों की राय कुछ पोस्टिंग में पूरी तरह से अनुकूल थी और आम तौर पर सभी पदों पर सकारात्मक थी। हालांकि, किसी भी पोस्ट को खराब मूल्यांकन नहीं मिला। आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, पारस्परिक बातचीत, प्रभावी संचार, महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मक सोच और निर्णय लेने की उनकी विशेषताओं सहित कुल जीवन कौशल के विकास की तुलना वैज्ञानिक, व्यवसाय और कला धाराओं में उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच की गई थी। लीना के पास वाणिज्य या कला संयुक्त से अधिक विज्ञान के छात्र हैं। विज्ञान और व्यवसाय में छात्रों की तुलना में कला के लोगों ने समस्या-समाधान, भावनाओं से निपटने और तनाव से निपटने में बेहतर प्रदर्शन किया। संजीव जिंदल (2016) ने बीकानेर संभाग के सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों में जीवन कौशल के शिक्षण के बारे में प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण की तुलना की। इस शोध में जीवन कौशल शिक्षण के प्रति शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के दृष्टिकोण में कोई स्पष्ट अन्तर नहीं पाया गया। जीवन कौशल शिक्षा के प्रति शहरी सरकार और शहरी गैर-सरकारी प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण में काफी भिन्नता नहीं थी। अतुल आई. कनैया (2016) गुजरात के भावनगर जिले से 160 गुजराती-भाषी कक्षा IX विद्यार्थियों का एक नमूना लेने के लिए और आर.के. जडेजा (2011)। यह पाया गया कि यद्यपि ग्रामीण और शहरी छात्रों में जीवन कौशल के स्तर में कोई स्पष्ट अंतर नहीं है, ग्रामीण छात्रों में जीवन कौशल का स्तर ग्रामीण छात्रों की तुलना में बहुत अधिक है।

अनुसंधान विधि व न्यादर्श

हाल ही में प्रकाशित अध्ययन में शोधकर्ता ने उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच जीवन कौशल शिक्षा के बारे में जागरूकता की डिग्री की जांच करने के लिए "सर्वेक्षण दृष्टिकोण" का इस्तेमाल किया। वर्तमान अध्ययन के लिए नमूना एक उपयुक्त यादृच्छिक दृष्टिकोण का उपयोग करके चुना गया था। नमूने के लिए राजस्थान के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के टोंक और अजमेर जिलों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का चयन किया गया था। सरकारी स्कूलों में नामांकित 800 बच्चों में से 400 ग्रामीण क्षेत्रों से और 400 शहरी क्षेत्रों से आते हैं। कुल 400 ग्रामीण बच्चे, 200 पुरुष और 200 लड़कियां शामिल हैं। कुल 400 शहरी छात्रों में से 200 पुरुष छात्रों और 200 महिला छात्रों को लिया गया है।

शोध उपकरण

स्वनिर्मित उपकरणः- जीवन कौशल शिक्षा के बारे में उच्चतर माध्यमिक छात्रों की जागरूकता के स्तर पर शोध करने के लिए एक जीवन कौशल पैमाना विकसित किया गया था।

मानकीकृत उपकरणः- मानसिक क्षमता के श्याम स्वरूप जलोटा संशोधित समूह परीक्षण का उपयोग किया गया था।

दता विष्लेषण के लिए सांख्यिकी

शोध में सांख्यिकी का उपयोग किया गया था जिसे केवल माध्य, मानक विचलन, सहसंबंध, टी-मान और "एफ-वैल्यू" निर्धारित करने के लिए प्रस्तुत किया गया था।

मुख्य निष्कर्ष

इस शोध के निष्कर्षों की नींव के रूप में स्थापित किए गए लक्ष्य और धारणाएं -

शोध के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का जीवन कौशल शिक्षा का ज्ञान इस प्रकार था:

स्टूडेंट लाइफ स्किल्स स्केल में, 28% छात्रों ने जीवन कौशल से संबंधित सभी 10 श्रेणियों के लिए "हमेशा" प्रतिक्रिया दी। छात्रों ने 52% के अनुपात में "ज्यादातर" पर अपनी राय दी है। 17% छात्रों ने "कभी-कभी" अपनी राय व्यक्त की है। 2% छात्रों ने कहा कि उनकी राय "बहुत कम" है। 1% छात्रों ने "नेवर" के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया है।

निष्कर्ष रूप में, यह कहा जा सकता है कि पारस्परिक संबंध, रचनात्मक सोच, आलोचनात्मक सोच, आत्म-जागरूकता, भावनाओं से मुकाबला, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, निर्णय लेने और तनाव से मुकाबला करना

उच्च स्तर के छात्रों के लिए जीवन कौशल शिक्षा के सभी पहलू हैं। माध्यमिक विद्यालयों। सहानुभूतिपूर्ण जागरूकता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के स्कूलों में छात्रों के बीच जीवन कौशल जागरूकता में लिंग अंतर का लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए लिंग के समग्र जीवन कौशल पैमाने पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं दिखाया गया।

रचनात्मक सोच, आलोचनात्मक सोच, आत्म-जागरूकता, भावनाओं से निपटने, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, तनाव से मुकाबला करने और सहानुभूति जैसे जीवन कौशल पैमाने की विशेषताओं को वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के लड़कों और लड़कियों दोनों में लिंग से अप्रभावित दिखाया गया था।

उच्च माध्यमिक विद्यालय में लड़कों और लड़कियों के लिए जीवन कौशल माप पर पारस्परिक संबंधों के कारक ने पर्याप्त लिंग अंतर दिखाया।

उच्च माध्यमिक स्तर के स्कूलों में नामांकित लोगों के बीच भौगोलिक अंतर के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के बारे में छात्रों की समझ पर निम्नलिखित की खोज की गई:

- ग्रामीण और शहरी दोनों उच्च माध्यमिक छात्रों के समग्र जीवन कौशल माप स्कोर ने निवास का कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं दिखाया।

इस बात का कोई सबूत नहीं है कि पारस्परिक संबंधों, रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच, आत्म-जागरूकता, भावनाओं से निपटने, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, तनाव प्रबंधन और सहानुभूति सहित जीवन कौशल के पैमाने के किसी भी पहलू पर निवास का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है।

उच्च माध्यमिक छात्रों के समग्र जीवन कौशल स्कोर और उनके बुद्धि स्तर के बीच कोई स्पष्ट संबंध नहीं था, जो कि उनके उच्च माध्यमिक संस्थानों में प्राप्त शिक्षा की डिग्री से निर्धारित होता था।

वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के कुल जीवन कौशल पैमाने के पहलू-रचनात्मक सोच, आलोचनात्मक सोच, आत्म-जागरूकता, भावनाओं से निपटना, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनाव से मुकाबला करना-बुद्धि स्तर से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं थे।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संपूर्ण जीवन कौशल माप पर, पहले आयाम, "पारस्परिक संबंध" ने पर्याप्त प्रभाव दिखाया।

निम्न विधियों का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया गया था कि उच्च माध्यमिक स्तर के स्कूलों में पिछड़ा वर्ग, दलित वर्ग और सामान्य वर्ग के छात्र जीवन कौशल शिक्षा के बारे में कितने जागरूक थे:

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के समग्र जीवन कौशल माप के अंकों पर, विभिन्न विषयों का कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों द्वारा लिए गए कुल जीवन कौशल पैमाने के आयामों पर, आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच, आत्म-जागरूकता, भावनाओं से मुकाबला, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनावों से निपटना और सहानुभूति।

जीवन कौशल पैमाने का पहला घटक, "पारस्परिक संबंध", उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाया।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के आईक्यू स्तर और जीवन कौशल निर्देश के उनके ज्ञान के बीच निम्नलिखित सहसंबंध की खोज की गई:

जीवन कौशल शिक्षा संबंध निर्माण, महत्वपूर्ण और रचनात्मक सोच, आत्म-जागरूकता, भावना विनियमन, प्रभावी संचार, समस्या समाधान, और निर्णय लेने के संदर्भ में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में संपूर्ण जीवन कौशल शिक्षा आयामों पर छात्रों के स्कोर सहानुभूति और तनाव प्रबंधन थे सकारात्मक सहसम्बन्ध दिखाया गया है।

जीवन कौशल पैमाने का मानसिक स्तर समग्र जीवन कौशल शिक्षा और जीवन कौशल शिक्षा के आयाम, पारस्परिक संबंध, रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच, आत्म-जागरूकता, भावनाओं से मुकाबला, प्रभावी संचार,

समस्या-समाधान और निर्णय से संबंधित है- बनाना, साथ ही तनाव से मुकाबला करना और सकारात्मक सह-संबंध के साथ सहानुभूति पाया। जबकि भावनाओं और पारस्परिक संबंधों से निपटने के साथ एक नकारात्मक पर्याप्त जुड़ाव की खोज की गई थी।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध प्रबंध में परिसीमन और निष्कर्षों के आलोक में आगे के अध्ययन के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत की गई हैं: उच्च माध्यमिक और माध्यमिक शिक्षा में छात्रों के बीच जीवन कौशल की तुलना करना संभव है। प्रशिक्षुओं के जीवन कौशल का विश्लेषणात्मक विश्लेषण संभव है।

प्रशिक्षकों, माता-पिता और विद्यार्थियों के जीवन कौशल की तुलना करना संभव है। सार्वजनिक और निजी स्कूलों में जीवन कौशल के बारे में विद्यार्थियों के सकारात्मक दृष्टिकोण का अध्ययन करना संभव है।

वर्तमान अध्ययन में टोंक और अजमेर जिले शोधकर्ता की जांच का विशेष ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, भविष्य की अध्ययन परियोजनाओं में अन्य राजस्थानी क्षेत्र शामिल हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुड सी. पी. एण्ड स्केट्स (1954). रिसर्च मैथडोलोजी, न्ययार्क: सैन्चुरी क्राॅफ्ट्स.
2. मैसलो, ए. एच. (1959). न्यू नाॅलेज इन ह्यूमन वेल्यूज, न्यूयार्क: हाॅर्पर एण्ड राय पब्लिकेशन
3. बेस्ट, जाॅन डब्ल्यू. (1963). रिसर्च इन एजूकेशन' , नई दिल्ली: प्रिटिंग्स हाॅल, प्रा. लि.
4. राजासेनन, नायर वी. (1968). लाइफ स्किल्स पर्सनैलिटी एण्ड लीडरशिप, न्यू दिल्ली: एम/एस सैवाॅड्स प्रिंट सिस्टम.
5. ढोढियाल, सच्चिदानन्द एवं फाटक, अरविन्द (1992). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
6. नेशनल एड्स कंट्रोल (2000). हियरिंग फाॅर ए गाइड टू फैमिली हैल्थ एण्ड लाइफ स्किल्स एजूकेशन फाॅर टीचर एण्ड स्टूडेण्ट, देहैली: नेशनल एड्स कंट्रोल आरगनाइजेशन.
7. सेठ, एम. (2000). प्लानिंग लाइफ स्किल्स एजूकेशन फौर एडोलेसेण्ट इन काॅरपोरेटिंग, रिलेशनशिप, हैल्थ एण्ड जैण्डर, न्यू देहैली: यू. एन. एफ. पी. ए.
8. यूनेस्को (2001). लाइफ स्किल्स इन नाॅन फार्मल एजूकेशन. यूनेस्को: ए रिव्यू.
9. गर्ग, गीता (2011). लाइफ स्किल्स एण्ड एकैडेमिक एंग्जाइटी आॅफ सैकेण्ड्री स्कूल चिल्ड्रन, एज्यूट्रक्स वोल्यूम 2, नं. 1 सितम्बर 2011, पेज 23.
10.करपागम, एस. (2012). एन इंट्रोडक्शन टू एजूकेशन एण्ड लाइफ स्किल्स, साउथ जोन केरल प्रकाशन : काउंसिल फौर टीचर, एजूकेशन.
11.एन. सी. ई. आर. टी. जीवन के लिए शिक्षा, एन. सी. ई. आर. टी. यूनेस्को: शिक्षकों, विद्यार्थियों, पारिवारिक स्वास्थ्य एवं जीवन कलाओं की शिक्षा की गाइड.